Forest Research Centre for Eco- Rehabilitation, Prayagraj Organized NATIONAL WORKSHOP ON

FORESTRY INTERVENTIONS IN ECO-REHABILITATION 3rd March, 2020

National workshop on forestry interventions in Eco-rehabilitation was organized by Forest Research Centre for Eco- Rehabilitation, Prayagraj in the collaboration of Botanical survey of India on 3rd March, 2020, with the theme Current challenges and or key issues on degraded forest

rehabilitation in terms of policy, institutional, ecological technical and social economic aspect, Forest researches in ecological rehabilitation, Climate change mitigation and adaptation and Forest Rehabilitation, Policy and institutional aspects of rehabilitation.



Academicians ,Scientists, Teachers, Students and Research Scholars from different Universities.



Institutions of National repute, Post Graduate Degree Colleges, Graduate Degree Colleges, Agriculture Colleges, Representatives of Non Government Organizations, Officials from Forest Department and other Stakeholders participated in this National

Workshop.



The Dignitaries participants of the Workshop were welcomed by the Organizing Secretary, Dr. Kumud Dubey, Scientist, FRCER, Prayagraj. Chief guest Dr. D.K. Roychowdhury Ex. Director, FIMI, Head FRCER, Prayagraj Dr. Sanjay Singh, Organizing secretary of National workshop



Dr. Kumud Dubey Dr. G.P. Sinha Addl. Director, BSI, Prayagraj, Prof. Krishna Misra, IIIT, Prayagraj, Dr. Lalji Singh and other dignitaries lighten the Lamp. The Workshop was officially started through the Welcome address of Dr. Sanjay Singh, Head, FRCER, Prayagraj.











Dignitaries Released the souvenir of National Workshop On Foresry Interventions In Eco-Rehabilitation.

BOTANICAL SURVEY OF



An informal addresses were dilivered by Dr. G.P. Sinha Addl. Director, BSI, Prayagraj, Prof. Krishna Misra, IIIT, Prayagraj, Dr. Neeraj Kumar, Executive Officer, National Academy of Sciences, Prayagraj. Dr. Dr. D.K. Chaudhari Director, FIMI, in his Inaugural address enlighten the audience regarding the need of the workshop on Forestry Intervention in Eco Rehabilitation.



The first Technical session was initiated by the plenary lecture of Prof. Lalji Singh, Head College of Forestry IGKV, Raipur. He emphasized on the importance of Productivity and Carbon Accumulation in Tropical dry



deciduas forest in Eco-rehabilitation. Dr. Kumud Dubey ,F.R.C.E.R.,Prayagraj presented the Eco-rehabilitation efforts being carried out in Utter Pradesh by FRCER, Prayagraj. Prof.Shivesh Sharma, Biotechnology Department, MNIT, Prayagraj, Role of Rhizospheric microbiome in reclamation.













Dr. Radharani, Biotechnology Department, MNIT, Prayagraj, delivered on the role of Phytoremediation technologies for ecological restoration of degraded ecosystems. Prof. H.K. Pandey, Civil Engineering Dept. MNIT, Prayagraj delivered on the Concept and techniques of rain water harvesting in water stressed condition of Uttar Pradesh. Dr. Sanjay Singh, Head F.R.C.E.R.,Prayagraj briefed about Rehabilitation researches going on in India conducted by ICFRE, Dehradun.







The second technical session was strated after lunch. The key note address was delivered by Dr. D.K. Chaudhari Director, FIMI on Environmental Legislation and Applicability for Mining Industry in India and Rehabilitation of Mining Area. Guest speaker Dr. Mridula Tripathi, CMP PG College, Prayagraj, Role of Green Nanotechnology a Future aspects in Rehabilitation. Dr. Sheo Kumar. BSI, Allahabad, Dr. Arati Garg, Scientist, BSI, Prayagraj presented on different aspects of Restoration. Other presenters from different institutions also presented in their paper in both Technical Sessions. Researchers, Ph. D. Students, PG students presented their Posters.

















Valedictory session was ended with summarization of the workshop and final recommendations of the National Workshop for Forestry Interventions in Ecorehabilitations and Vote of Thanks by Dr. Anubha Srivastava.











ही स्थिरिय है। अर्थात जहां मिलन है, वहां ठहराव जरूरी हैं। जहां मिलन हो. संगय हो. वहीं शोधायमान सिहासन है।

माराराबापू न कहा तक छत्र हमशा रहता है। अक्षयंत्रद हमेशा रहता है। हमारा छत्र आसमान है। जब सूरज, चींद नहीं रहेंगे. तब भी हमारा छत आसमान रहेगा।

ठनमा। बुद्धपुरण वह ह जा समाज क मुखार की जिम्मेदारी अपने अपर है। बाबू ने कहर कि स्थिर एवं अधेगता, अटलता का संदेश देता है, जबकि यूनता हुआ

ामळाकर 48 एकन्ह उनक घरा म मा*जू*ट है। यरमात्मा का छत्र उनके चरण में हैं। क्योंकि परवात्या शोधा का रात्यान नहीं है। सारे छत्र परमात्मा के दासी है। बाप

संक्षिपत' पुरेशका का विनोधन किया नवा।

राष्ट्रीय कार्यशाला में वन क्षेत्र बढ़ाने को लेकर कार्यशाला आयोजित

प्रधानराजः (नि. सं)। चरि-युनर्त्यापन वन अनुसंघान केन्द्र प्रयागराज द्वारा पर्यावरण पुनर्स्थापन में वानिकी के हस्तक्षेप पर एक दिवसीय राष्ट्रीय

खनिज उद्योग महरसंघ डॉ. डी.के राय वैचरी ने दीप प्रज्वतित कर किया।

केन्द्र प्रमुख डॉ. लंजय सिंह ने भारत में पुनर्त्वापन एवं वन क्षेत्र बदाने सम्बन्धी हेत् किए जा रहे कायी और तकनीको से अवगत कराया। केन्द्र प्रमुख ही संजय सिंह के साथ ही जी पी सिन्ध, अपर निर्माक एवं विशिष्ट असिवि हों नीरज

कुमार भारतीय राष्ट्रीय विशान अकावनी व प्रो. कृष्ण मिला भारतीय नुवना प्रीद्योगिकी संस्थान प्रयागराज उपस्थित रहे। डॉ. वैचरी ने भारत में स्त्रनन उद्योग हेतु पर्यावरण कानून एवं सावधानियों पर बत दिया। भारतीय वनस्पति सर्वेश्वन के अपर मिदेशक डॉ.जी.पी सिन्हा ने क्षेत्रीय केन्द्र की गतिविधियों से अवगत करावा।

तानिकी पहाविद्यालय इन्दिश गांची कृषि विश्वविद्यालय रायपुर, छलीलगढ़ प्रमुख प्रो. ठाटाजी सिंह ने दिया। कार्यकाता में दो पुस्तको क्रमणा 'आंतडे की खेती एड

ब्रो.एव.के पाण्डेय, सिवित अभियात्रिकी विभाग, एमएनएनआईटी ने वर्णा ज्वत संवयन की अवधारणा और तकनीक नियति पर बात दिया। प्रो. शिक्षेश शर्था जैव प्रीदयोगिकीय विभाग एनएनएनआईटी ने जुवनजीत के पुनर्मुत्योकन में प्रकंड की भूमिका से अवगत कराया। डॉ. निवकुमार वैज्ञानिक, भारत से ने ओओन पर के उपचार से प्रतिभागियाँ को अवनत कराया। ब्रो.अनुबन पाण्डेय, इताहाबाद विश्वविद्यालय ने फजी तकनीक के बारे में बताया कि इससे उपग्रह द्वारा तिए गए विश्वों से प्रयागराज शहरी हिस्तार एवं कनस्पति के नुकतान की निगरानी कर सकते हैं। प्री मृदुता त्रिपाटी ने हरित नैनो तकनीक के श्रीवेध्य पहरपुजी से अवनात कराया। ब्री. ए.एस रापुराणी ने पर्यावरण पुनर्वतस में हो रहे सतत विकास के बारे में जानकारी दी। डॉ. आश्री गर्न ने जैव विविधता संरक्षण पर बात दिया। संचातन केन्द्र की वैज्ञानिक डॉ.अनुमा श्रीवास्तव ने किया तथा इसके केन्द्रीय व्याख्यान सकल आयोजन में तकनीकी अधिकारी हीं. एस ही शुक्क व रतन कुमार गुरता के निर्देशन में विभिन-परियोजनाओं में कार्यस्त

विदयायित्यों का विशेष सहयोग गा।



कार्यशासा भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण क्षेत्रीय केन्द्र प्रयागराज में हुआ। जिसका शुभारंथ पूर्व उप-महत्त्वबंधक हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड एवं पूर्व निर्देशक भारतीय अनुसंधान में भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के प्रधानों के बारे में बताया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक हों कुमुद दूबे ने 3 प्र में पर्यावरण पुनर्शन
